1st PUC हिन्दी- साहित्य वैभाव

पद्य भाग-आधुनिक कविता

तोड़ती पत्थर

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1. नारी कहाँ पत्थर तोड़ती थी?

उत्तर: नारी इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती थी।

प्रश्न 2. पत्थर तोड़ती नारी के तन का रंग कैसा था?

उत्तर: पत्थर तोड़ती नारी के तन का रंग साँवला था।

प्रश्न 3. नारी बार-बार क्या

उत्तरः नारी बार-बार हाथ में बड़ा हथौड़ा लेकर प्रहार करती थी।

प्रश्न 4. नारी कब पत्थर तोड़ रही थी?

उत्तर: नारी दुपहर की धूप में पत्थर तोड़ रही थी।

प्रश्न 5. नारी के माथे से क्या टपक रहा था?

उत्तर: नारी के माथे से पसीना टपक रहा था।

प्रश्न 6. 'तोड़ती पत्थर कविता के कवि कौन हैं?

उत्तरः 'तोड़ती पत्थर' कविता के कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी

'निराला' हैं।

II.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1. इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़नेवाली स्त्री का चित्रण कीजिए।

उत्तर: इलाहाबाद के पथ पर वह महिला पत्थर तोड़ती थी। वहाँ कोई छायादार पेड़ नहीं था, जहाँ वह बैठ सके। उसका तन साँवला था, पर वह भरे यौवन में थी। आँखें नीचे थी और काम में तत्पर थी। बड़ा हथौड़ा हाथ में लिए प्रहार करते हुए पत्थर तोड़ रही थी।

प्रश्न 2. किन परिस्थितियों में नारी पत्थर तोड़ रही थी?

उत्तर: एक साधनहीन और असहाय नारी इलाहाबाद के पथ पर बैठकर पत्थर तोड़ रही है। आसपास कोई छायादार पेड़ नहीं है। धूप चढ़ रही थी। गर्मी के दिन थे। शरीर को झुलसा देनेवाली धूप थी। गर्म हवा और धूल उड़ रही थी। दुपहर का समय था। इसी परिस्थिति में वह नारी पत्थर तोड़ रही थी।

प्रश्न 3.'तोड़ती पत्थर कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: 'तोड़ती पत्थर कविता में निरालाजी ने इलाहाबाद की एक सड़क के किनारे पत्थर तोड़ती मजदूर स्त्री का चित्रण किया है। साथ ही एक मजदूरिन जिस परिस्थिति में काम कर रही थी, उसका यथार्थ और मार्मिक चित्रण किया है। स्त्री रुई की तरह तपती धरती और बरसती लू की दुपहरी में पत्थर तोड़ रही है। आसपास कोई छायादार पेड नहीं है। गर्म हवा और धूल उड़ रही है। यहाँ कवि ने उस सांवली सलोनी निर्धन मजदूरिन के कठिन परिश्रम का महत्व प्रकट किया है।

III.ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

प्रश्न 1. गुरु हथौड़ा हाथ,

करती बार-बार प्रहार - सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

उत्तर:

प्रसंग : यह पद हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'तोड़ती पत्थर' नामक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं।

संदर्भ : निराला जी इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती महिला की स्थिति का वर्णन कर रहे हैं।

स्पष्टीकरण : गर्मियों की तपती दुपहरी में निराला जी ने एक स्त्री को पत्थर तोड़ते हुए देखा था। उसके हाथ में भारी हथौड़ा था और वह उससे पत्थर पर बार-बार चोट का रही थीं। वह पत्थर तोड़ रही थी। जहाँ वह बैठी थी वहाँ कोई छायादार पेड़ भी नहीं था लेकिन उसके सामने एक विशाल भवन था जिसमें पंक्तियों में पेड़ लगे थे। निराला कहना चाहते हैं कि गरीबों को सुख नसीब नहीं है। सुख धनी लोगों के पास है। वे साधन संपन्न है। समाज में विषमता व्याप्त है।

विशेष : छायावादी प्रगतिशील कविता। अर्थ-वैषम्य पर प्रकाश डालती है। मुक्त छंद का प्रयोग।

प्रश्न 2.चढ़ रही थी धूप

गर्मियों के दिन

दिवा का तमतमाता रूप।

उठी झुलसाती हुई लू

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'तोड़ती पत्थर' नामक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला

हैं।

संदर्भ : इलाहाबाद के पथ पर तमतमाती धूप में पत्थर तोड़नेवाली नारी के परिश्रम के बारे में कवि कहता है।

स्पष्टीकरण : पत्थर तोड़नेवाली नारी झुलसाती धूप में, पसीना टपकाती अपने कार्य में मग्न है। उसकी विवशता पर कवि का मन दुखी होता है किन्तु उस नारी के धैर्य तथा कार्य में लगन देखकर उसके प्रति सम्मान बड़ जाता है। विपरीत परिस्थितियों में भी वह अपना कार्य लगन से कर रही थी।

प्रश्न 3. देखते देखा मुझे तो एक बार

उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार।

देखकर कोई नहीं,

देखा मुझे उस दृष्टि से

जो मार खा रोई नहीं।

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक साहित्य वैभव' के 'तोड़ती पत्थर' नामक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला हैं।

संदर्भ : एक गरीब मजदूरिन की असहाय हालत का वर्णन कवि ने सरल परन्तु मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है जो पाठकों के मन को द्रवित कर देता हैं।

स्पष्टीकरण : कवि मजदूरिन की दयनीय दशा को देख रहा था। तभी मजदूरिन ने कवि को अपनी ओर देखते हुए देख लिया। उसने दृष्टि उठाकर छन भर के लिए उस वैभवशाली विशाल भवन की ओर देखा। जब उसे वहाँ कोई दिखाई नहीं दिया तो उसने विवशता से कवि के तरफ देखा। उसकी दृष्टि वैसी थी जैसे कोई व्यक्ति लगातार शोषण से भयभीत होकर रोता नहीं है। शोषण ने उसके आँसू सुखा दिए थे।